कुछ दिन पहले मधुबन के पांडव भवन के अंदर
रहता था एक हंस का जोड़ा, एक हंस का जोड़ा
कुछ दिन पहले मधुबन के पांडव भवन के अंदर
रहता था एक हंस का जोड़ा, एक हंस का जोड़ा
मम्मा-बाबा के अव्यक्त होते ही संभाला यज्ञ कारोबार
दीदी-दादी तो थे दो जिस्म एक जान, देते प्यार अपार
मम्मा-बाबा के अव्यक्त होते ही संभाला यज्ञ कारोबार
दीदी-दादी तो थे दो जिस्म एक जान, देते प्यार अपार
दोनो माँ की पालना आ आ...
दोनो माँ की पालना से पौधा वट वृक्ष बना
कुछ दिन मधुबन के पांडव भवन के अंदर
रहता था एक हंस का जोड़ा, एक हंस का जोड़ा
सूझ-बूझ, एकोनोमी, लव और लॉ का बैलेंस था अपार
सब पर लुटाती मातृत्व भरा सच्चा रूहानी प्यार
सूझ-बूझ, एकोनोमी, लव और लॉ का बैलेंस था अपार
सब पर लुटाती मातृत्व भरा सच्चा रूहानी प्यार

इनकी जोड़ी.....इनकी जोड़ी थी बहुत अनुकरणीय
कुछ दिन पहले मीठे मधुबन के पांडव भवन के अंदर
रहता था, एक हंस का जोड़ा एक हंस का जोड़ा
हर यज्ञ वत्स का रखती ध्यान, करती संगदोष से संभाल
व्यर्थ से मुक्त रखती सदा दोनो, थी ये बाबा की कमाल
हर यज्ञ वत्स का रखती ध्यान, करती संगदोष से संभाल
व्यर्थ से मुक्त रखती सदा दोनो, थी ये बाबा की कमाल
दिल में ही बाबा.....दिल मे एक बाबा के ही गीत गातीं हुईं
कुछ दिन पहले मधुबन के पांडव भवन के अंदर
रहत् था एक हंस का जोड़ा - 2
दीदी का तो बस एक स्लोगन था, अब घर जाना है
थी वो तृप्त नंबर वन, पा लिया जो पाना है
दीदी का तो बस एक स्लोगन था, अब घर जाना है
थी वो तृप्त नंबर वन, पा लिया जो पाना है
सेकेंड में उड़ चली....

सेकेंड में उड़ चली, यादो में समाई हुई
कुछ दिन पहले मधुबन के पांडव भवन के अंदर
रहत् था एक हंस का जोड़ा - 2